P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 **SHRINKHALA :** VOL-II * ISSUE-V*January-2015
E: ISSN NO.: 2349-980X

पं0 नेहरू का समाजवादी चिन्तन

ज्योति सक्सेना
सह प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
डी0जी0 (पी0जी0) कालेज,
कानपुर।

अनिरुद्ध कुमार
सहायक प्राध्यापक,
इतिहास विभाग,
रानी चन्द्र प्रभा डिग्री कालेज,
खागा, फतेहपुर।

सारांश

दो सौ वर्षों की अंग्रेजों की दासता के बाद भारत में मृत प्रायः अर्थव्यवस्था, भारत विभाजन का दंश अनुमानतः जिसमें एक लाख लोग काल कलिवत हुये थे। ऐसी विपरीत परिस्थितियों में पं0 नेहरू जी ने प्रधानमन्त्री पद का भार संभाला। यह कहना गलत न होगा कि आधुनिक भारत उन्हीं के चिन्तन का परिणाम है, वे बहु–आयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनकी जितनी रूचि, साहित्य, इतिहास, राजनीति शास्त्र एवं अर्थशास्त्र में थी। उतनी ही रूचि विज्ञान और प्रौद्योगिकी में भी थी। वे बड़े–बड़े कल कारखानों के जहाँ समर्थक थे वहीं वे कुटीर उद्योगों के पोषक थे उन्होंने अपने दूर दृष्टि से पंचवर्षीय योजानाओं के माध्यम से भारत के विकास की क्रमबद्ध नीव रखी। दूसरी ओर विदेश नीति में गुट निरपेक्ष आन्दोलन के प्रणेता बन गये। सन् 1917 की बोल्शेविक क्रान्ति से वे विशेष रूप से प्रभावित थे। वे पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के साथ समाजवादी व्यवस्था के प्रखर अनुयायी थे। प्रस्तुत शोध पत्र में उनके समाजवादी चिन्तन की व्याख्या करने का प्रयास प्रस्तुत है।

मुख्य शब्दः पूँजीवादी अर्थव्यवस्था, समाजवादी चिन्तन, बहुउद्देशीय योजना

प्रस्तावना

सर्वप्रथम ब्रिटेन और फ्रान्स में समाजवाद का उदय एक विचार के रूप में 1830 से 1840 के बीच हुआ पूँजीवाद में जो त्रुटियाँ थी उसके विरूद्ध एक प्रतिक्रिया के फलस्वरूप भी शुरूआत हुयी। साधारण शब्दों में समाजवाद शब्द का तात्पर्य ''हर एक को उसकी योग्यता उसकी जरूरत या दूसरे शब्दों में सारी चीजें सभी व्यक्तियों के लिये सामाजिक या सामूहिक, मालिकाना हक उत्पादन निर्माण वस्तुओं के लिये हो यह समाजवाद का मौलिक विचार है। दूसरा समाजवाद का महत्वपूर्ण अंग आर्थिक आय में समानता हर एक को समान अवसर से भी है।''

पूँजीवादी त्रुटियों को समाप्त करने का प्रथम प्रयास राबर्ट ओविन ने किया जो कभी यूरोपियन समाजवादी के साथ कारखाना मालिक थे उन्होंने स्वयं श्रमिकों और उनके बच्चों के सामाजिक उत्थान के लिये बहुउद्देशीय योजनायें शुरू की, जैसे बचतखाता, पेंशन, स्वास्थ्य बीमा, निर्धारित भत्तें की कार्य अवधि, शिक्षा की सुविधायें इत्यादि, तत्पश्चात कालमार्क्स ने जो वैज्ञानिक समाजवाद के पक्षधर थे। समाजवाद को परिभाषित करते हुये लिखा कि ''समाजवाद का उद्देश्य है कि मजदूर और किसान वर्ग एवं जन साधारण वर्ग द्वारा आधुनिक पूँजीवादी व्यवस्था में महाजनी व्यवस्था को समाप्त किया जाये।[1]

सन् 1917 की वोल्सेविक क्रान्ति ने भारत में समाजवादी आन्दोलन के उद्भव और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। रूसी क्रान्ति के बाद राष्ट्रवादी भारतीयों के मस्तिष्क में संगठित श्रमिकों के संगठन का विचार आया। All India Trade Union Congress का गठन महत्वपूर्ण कदम था।[2] इसी क्रम में सामाजिक क्राति के अग्रदूत स्वामी विवेकानन्द ने भविष्यवाणी की थी कि भारत स्वतन्त्रता ही प्राप्त नहीं करेगा बल्कि समाजवाद पर विजय प्राप्त करेगा। विवेकानन्द ने तो यहाँ तक कहा कि वेदान्त और समाजवाद में कोई अन्तर नहीं। ये दोनों एक सिक्के के दो पहलू है।[3]

समाजवादी चिन्तन

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक चरण में समाजवादी विचार धारा का सुभाष चन्द्र बोस तथा जवाहर लाल नेहरू जैसे युवा तुर्क राष्ट्रवादियों के मस्तिष्क में गहरा प्रभाव था। नेहरू और बोस ने सम्पूर्ण भारत का भ्रमण किया तथा उन्होंने उपनिवेश वाद, पूँजीवाद और जमीदारी प्रथा की कड़ी आलोचना की।

सन् 1914 के प्रथम विश्व युद्ध ने अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को कड़ी चोट पहुँचायी, जिसका प्रभाव विश्व व्यापी मुद्रा स्फीति एवं पूँजीवादी व्यवस्था

दर्शाती है।[4] भारत में मुद्रास्फीति आर्थिक विपन्नता बेरोजगारी, किसानों की समस्याओं ने युवा वर्ग को तेजी से आकर्षित किया। नेहरू जी और पुरूषोत्तम दास टण्डन ने सन् 1920 में उ0प्र0 कांग्रेस में जमीदारी प्रथा के उन्मूलन का समर्थन करने का निर्णय लिया।[5] यह भी तथ्य रोचक है कि पं0 मोती लाल नेहरू ने अपने पुत्र के क्रिया कलापों के प्रति विशेष समर्थन नहीं दिया।[6] भूख और गरीबी दोनों भारत की मुख्य समस्या थी। इस अशान्त ज्वार भाटे को ब्रिटिश सरकार ने दबाने के लिये दमनात्मक तरीके अपनाये।[7] सरकार की दमन नीति के विरोध में देश–विदेश में एम0एन0 राय, शौकतवाल, ए0ए0 मिर्जा, कृष्ण कान्त मालवी ने बोल्शेविक–वाद का समर्थन प्रमुख रूप से किया। इसने राष्ट्रवाद, समाजवाद, आजादी, समानता, बन्धुत्व और अन्य क्रान्तिकारी विचारों को फैलाया।

नेहरू ने समाजवाद की व्याख्या करते हुये कहा कि ''समाजवाद युद्ध न होकर एक विचार है। जिसको समझना पढ़ना और आचरण में लाना चाहिये।''[8] भगत सिंह और अन्य युवकों ने पार्टी के कार्यकर्ताओं ने समाजवादी विचार धारा को आगे बढ़ाया।[9] क्रान्तिकारियों ने क्रान्ति को जनमानस का अधिकार बताया। उन्होंने कहा क्रान्ति कानून है, क्रान्ति आदेश है, और यही सत्य है।[10] क्रान्तिकारियों ने क्रान्ति सदा जीवित रहे, इन्कलाब जिन्दाबाद जैसे नारों से अपने विचारों की अभिव्यक्ति की।

समाजवाद क्यों

नेहरू जी ने कहा था कि दुनिया की समस्या और हिन्दुस्तान की समस्या का हल समाजवाद में है।[11] यह एक जीवन दर्शन है और इसी रूप में मुझे अच्छा लगता है मुझे हिन्दुस्तान की गरीबी व्यापक बेरोजगारी भुखमरी और इस मुल्क की गुलामी को दूर करने के लिये समाजवाद के सिवाय कोई दूसरा हल नजर नहीं आता है।[12] समाजवाद का परम लक्ष्य सामाजिक और आर्थिक परम लक्ष्य स्थापित करता है और एक अर्न्तराष्ट्रीय सहकारी समाजवादी विश्व संघ के ढाँचे के अन्तर्गत राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त करना है।[13] वे समाजवाद के द्वारा भूमि तथा उद्योगों में सन्निहित सामन्ती तथा निरंकुश भारतीय रियाशती व्यवस्था का अन्त करना चाहते थे। उनका कहना था समाज पर व्यक्तिगत सम्पदा की अधिकता समाज में कुल लोगों को भयंकर शक्ति प्रदान करती है और इसलिये यह समाज के लिये बहुत ही हानिकारक है।[14] इसीलिये 19 नवम्बर, 1963 में जयपुर में अखिल भारतीय कांग्रेस की बैठक में नेहरू ने व्यथित हृदय से अपने दल को चेतावनी दी कि यदि समाजवाद के लिये एक कार्यक्रम अविलम्ब निर्मित नहीं किया गया तो उन्हें डर है कि दस या पन्द्रह वर्षों के उपरान्त हमारे देश की जनता शान्ति पूर्ण साधनों में विश्वास खो देगी।[15]

असमानता एवं निर्धनता के प्रति विचार

नेहरू जी का विचार था कि इस मुल्क में ऊँच–नीच और सामाजिक असमानता के छुटकारा पाना होगा। हमें एक नई व्यवस्था बनानी होगी। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के लिये पूरे विकास की सम्भावनायें हो, शोषण न हो और जिसमें केवल राजनीतिक ही नहीं बल्कि आर्थिक जनतन्त्र भी हो जिसका मतलब है, आर्थिक समानता जिसके बिना राजनीतिक जनतन्त्र भी एक धोखा होगा। जब कोई भूखा हो और भूखों मर रहा हो तो उसे वोट देने का अधिकार है या नहीं इससे क्या फर्क पड़ता है।[16]

वर्गीय हित एक समस्यात्मक प्रश्न

नेहरू जी के सामने यह भी एक समस्या थी कि एक वर्गीय हित को किस प्रकार समाप्त किया जाये जिससे कि एक वर्ग विहीन समाज का निर्माण हो सके। जिसमें सभी व्यक्ति को समान न्याय एवं समान सुविधा उपलब्ध हो जिसमें मानव जाति के भौतिक एवं सांस्कृतिक स्तर को उच्चतर करने और उसमें सहयोग निःस्वार्थ सेवाभाव सत्य निष्ठा सदभाव और स्नेह के आध्यात्मिक गुणों को बढ़ाने तथा अंततः एक विश्वव्यापी समाज की स्थापना करने की सुनिश्चित योजना हो।[17]

लखनऊ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1936 में हुये अधिवेशन में नेहरू ने निर्भीक तथा स्पष्ट शब्दों में कहा था मैं इस बात से संतुष्ट हूँ कि विश्व की समस्या तथा भारत की समस्या का एक मात्र समाधान समाजवाद में है और जब मैं यह बात करता हूँ तो मैं ऐसा गोल–मोल मानवीय दृष्टि मात्र से नहीं करता हूँ, बल्कि वैज्ञानिक आर्थिक अर्थों में कहता हूँ।[18]

साधन न गाँधीवादी न मार्क्सवादी

नेहरू जी मध्य मार्गी थे उन्हें न तो मार्क्सवादी हिंसा और न गाँधी की हृदय परिवर्तन की पद्धति ही साधन के रूप में आकृष्ट कर सकी। उन्होंने दोनों के बीच का मार्ग अपनाया उनके विचार सर्वहारा का अधिनायकत्व जो हिंसा पर आधारित है आमान्य था क्योंकि मानव समाज अब ऐसी अवस्था में आ गया है कि जनता पर बलपूर्वक कोई इच्छा थोपी नहीं जा सकती। उन्होंने सम्पूर्ण सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को पुर्नगठित करने के लिये मार्क्स के राज्य शक्ति के प्रयोग को अंगीकार किया। किन्तु गाँधी के इस विचार को भी स्वीकृत दी कि राज्य शक्ति का प्रयोग अधिकाधिक शान्तिपूर्ण एवं सौजन्यपूर्ण ढंग से हो। सत्ता प्राप्त के उपरान्त नेहरू का बल प्रयोग जनतान्त्रिक होता गया और मत परिवर्तन के विचार को उन्होंने विस्मृत नहीं किया। न्यून आक्रामक और शान्ति पूर्ण साधनों के प्रति वे संवेदनशील होते दिखायी दिये। नेहरू के विचारों और मार्क्सवाद में मौलिक अन्तर निम्नवत था।?

1. मार्क्स के विचार बदलते हुये परिस्थितियों के अनुसार संशोधित करके ही स्वीकार किये जा सकते थे।
2. मार्क्सवाद में हिसा का समर्थन था। नेहरू जी का चिन्तन अहिंसा से प्रभावित रहा।
3. नेहरू ने वर्ग संघर्ष की विधिमान्यता को स्वीकार किया लेकिन वे इसे बढ़ावा नहीं देना चाहते थे।[19] वास्तव में मार्क्स की तरह गाँधी और नेहरू में चिन्तन के धरातल भिन्न थे। गाँधी जी के लिये अहिंसा धर्म था। नेहरू के लिये अहिंसा एक नीति थी।[20]

राज्य समाजवाद के सन्दर्भ में

नेहरू जी के राज्य विषयक विचार सिद्धान्त की अपेक्षा अनुभव पर आधारित यर्थात पर आधारित थे। उनका चिन्तन था कि राज्य जितना सामाजिक बनता है उतना अधिक ही व्यक्ति लाभान्वित होते है। इसलिये अधिकार और कर्तव्य है। यदि राज्य और व्यक्ति भली–भाँति संगठित हो तो परस्पर संघर्ष नहीं है।[21] नेहरू की दृष्टि में राज्य का प्रथम कार्य व्यक्तियों की प्राथमिक आवश्यकताओं की परिपूर्ति

करना है, आर्थिक संगठन की ओर से प्रत्येक योजना राज्य की योजना है। क्योंकि वैयक्तिक स्रोत न्यून होते है। नेहरू राज्य को एक स्वामी की अपेक्षा एक सेवा संस्थान मानते थे। राज्य द्वारा प्रदत्त राजनीतिक स्वतन्त्रता अपने में एक साध्य न होकर साधन है। जिसके माध्यम से आर्थिक एवं सामाजिक स्वतन्त्रता प्राप्त की जा सकती है। प्रत्येक दृष्टि बिन्दु से राज्य के कर्तव्य मानव उत्फुल्लता को विकसित करना। राज्य का अन्तिम लक्ष्य का मानव विकास है।[22]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. कार्ल मार्क्स एवं फेडरिक ईगल्स–कम्युनिस्ट मैनो फेस्टो, मास्को 1975 पृ0 43
2. मधुलिमेय–इण्डियन नेशनल मूवमेन्ट, पृ0 378
3. के0 दामोदरन–भारतीय चिट्ठा–पृ0 548
4. असिम कुमार चौधरी–सोशलिस्ट मूवमेन्ट इण्डिया द कांग्रेस सोसलिस्ट सन् 1934–1947
5. जवाहर लाल नेहरू–ए आटोबायोग्राफी पृ0 310–311
6. मधुलिमेय–इण्डियन नेशनल मूवमेन्ट, पृ0 382
7. सीक्रेट फाइल नं0 266 दिनांक 19.05.1919 (तमिलनाडु–आरकाइब्स) वी0एन दत्ता और एस0सी0 मित्तल–स्रोत नेसनल मूवमेन्ट 1985 पृ0 16
8. सोसलिस्ट मूवमेन्ट इन इण्डिया द कांग्रेस सोसलिस्ट इन कलकत्ता–पृ0 17
9. वही।
10. विपिन, चन्द्र–नेशनलिज्म एण्ड कोलोनियलिज्म इन मार्डन इण्डिया, नयी दिल्ली पृ0 32
11. लखनऊ में 12 अप्रैल 1936 को इण्डियन नेशनल कांग्रेस के अधिवेशन में अध्यक्षीय भाषण से सेलेक्टेड वर्क्स, खण्ड–7, पृ0 180–82
12. जवाहर लाल नेहरू–हिन्दुस्तान की समस्यायें कांग्रेस समाजवाद, पृ0 114 हीरेन मुखर्जी : ए स्टडी आफ नेहरू, पृ0 66
13. जवाहर लाल नेहरू, ए आटोवायोग्राफी, पृ0 243
14. पूर्वोधृत पृ0 243
15. हीरेन्द्र मुर्खजी–पूर्वोधृत पृ0 174
16. जवाहर लाल नेहरू : वाडमय खण्ड–7 पृ0 237–238
17. जवाहर लाल नेहरू : मेरी कहानी पृ0 237–38
18. सोवियत रिव्यू : जुलाई 1989 पृ0 6–7
19. एम0एन0 दास–द पोलिटिकल फिलोसफी आफ नेहरू, पृ0 123
20. फ्रेक मारेस–जवाहर लाल नेहरू एक जीवनी, पृ0 165
21. नारमन काजेन्स–टाक्स विद नेहरू, पृ0 23
22. ब्ला0 लेनिन : संकलित रचनायें दस खण्डों में खण्ड–9, प्रगति प्रकाशन, मास्को 1985 पृ0 33–34